सूफी परंपरा और भारत: आध्यात्मिकता से समाज तक

- प्रो. गणेश बी. पवार

शोध सार:

सूफी परंपरा भारत में आध्यात्मिकता और सामाजिक संरचना के ताने-बाने को गहराई से प्रभावित करती रही है। इस शोध में सूफीवाद के भारतीय समाज पर प्रभाव, इसकी धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी संतों ने आध्यात्मिकता के माध्यम से समाज में प्रेम, करुणा और भाईचारे का संदेश फैलाया। चिश्ती, सुहरवर्दी, कादरी और नक़्शबंदी सिलसिलों के प्रभाव को देखते हुए यह अध्ययन भारतीय इतिहास, साहित्य, संगीत और लोक परंपराओं में सूफीवाद की भूमिका को रेखांकित करता है। साथ ही, यह शोध सूफी शिक्षाओं और वर्तमान सामाजिक परिदृश्य के बीच सामंजस्य को भी समझने का प्रयास करता है। अंततः, यह अध्ययन सूफी परंपरा के सामाजिक समावेश, सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक विरासत के महत्व को उजागर करता है, जो भारत की बहुलतावादी संस्कृति को सशक्त बनाती है।

बीज शब्द: सूफीवाद, परंपरा, विशेषता, पूजा पद्धति, सूफी संगीत, सूफी संत

भारत में सूफी या तसव्वुफ़ हमेशा लोगों के दिलों के नजदीक रहा है। भारत में सूफी मत का आगमन 11वीं 12वीं शताब्दी से माना जाता है। सूफी संत राजाओं से दान-उपहार स्वरूप किसी भी वस्तु को स्वीकार नहीं करते थे और सदा सादगी भरा जीवन बिताना पसंद करते थे। सूफियों की पूजा पद्धति तथा उनकी कई तरीके या घराने हैं। सूफीवाद निस्वार्थ अनुभव और सत्य विचार समन्वित मूल्य साहित्य, शिक्षा और मनोरंजन ने समकालीन भारत में इस्लाम की उपस्थिति पर स्थाई प्रभाव डाला है सूफी संत लोकप्रिय हो गए क्योंकि इन्होंने स्थानीय बोलियों में भारत में मुस्लिम भक्ति संगीत परंपराओं का प्रचार किया।

'सूफ़ीवाद' या 'तसव्वुफ़' हमेशा से ही लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करता रहा है। तसव्वुफ़ का मतलब है सूफ़ीवाद । यह इस्लाम का एक रहस्यवादी पंथ है। "अरबी में सूफ़ी का मतलब है पवित्रता । 'तसव्वुफ़' शब्द अरबी भाषा के शब्द से बना है जिसका मतलब ऊन होता

है। इसलिए सूफ़ी वह व्यक्ति होता है जो ऊनी वस्त्र पहनता है।"[1] इन सूफियों की सरगर्मियों का केंद्र जो जगह होती थी वही उनकी खानखाह कहलाती थी। सूफियों की खानखाहों से लंगर बटते और लोगों की मुश्किलों को हल करने की कोशिश की जातीकहा जाता है कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की खानखाह पर लोगों के टूट पड़ने से एक बार तो शासक भी जलने लगा था। सूफियों की मौत के बाद उनकी खानखाहें ही दरगाह बन गयीं और वैसी ही भीड़ अब भी रहती है जैसी सूफियों की ज़िन्दगी में थी। दिल्ली की ज़्यादातर दरगाहों के आस पास का इलाका अब बिलकुल बदल गया है बड़े बड़े मॉल और कम्युनिटी केंद्र खुल गए हैं लेकिन दरगाहों के अन्दर की दुनिया जैसे अपनी जगह ठहर गयी हो आज भी वही है।

जो सदियों पहले था वही लोबान, वही मन्नती धागे और वही मुराद मांगने वालों की भीड़ सूफियों की दरगाहों पर हमेशा से मुरादे मांगने वालों की भीड़ इकठ्ठा होती रही है और इस भीड़ को यकीन है कि इस चौखट से ही उनकी झोलियाँ भारती हैं। "भारत में तसव्वुफ़ की शुरुआत उन सूफियों ने की जो यहाँ पर इस्लाम के भाई चारे और शांती के सन्देश को फैलाने के लिए आए। इस्लाम धर्म की नीवं पैगम्बर मुहम्मद साहब ने डाली थी। इस्लाम धर्म ने अपने अन्दर कई धार्मिक और आध्यात्मिक आन्दोलनों का उदय देखा। ये आन्दोलन प्रमुख रूप से कुरआन की व्याख्या पर आधारित थे। इस्लाम के अन्दर दो प्रमुख सम्प्रदायों का उदय हुआ सुन्नी और शिया। हमारे देश में दोनों मत हैं लेकिन कई अन्य देशों में जैसे ईरान, इराक, पाकिस्तान आदि देशों में आप केवल एक ही मत के अनुयायियों को देख पाएँगे।"[2]

भारत में सूफी मत का आगमन 11वीं और 12वीं शताब्दी में माना जाता है। भारत में सबसे श्रेष्ठ सूफियों में से एक थे अल हुजवारी जिनका निधन 1089 ई. में हो गया। उन्हें दाता गंजबख्श (असीमित खजाने के वितरक) के रूप में जाना जाता है। प्रारंभ मेंसूफियों के मुख्य केन्द्र मुल्तान व पंजाब थे। परंतु 13वीं व 14वीं सदी तक सूफी कश्मीर, बिहार, बंगाल एवं दक्षिण तक फैल चुके थे। यह उल्लेखनीय है कि भारत में आने से पूर्व ही सूफीवाद ने एक निश्चित रूप ले लिया था। उसके मौलिक एवं नैतिक सिद्धांत, शिक्षण एवं आदेश प्रणाली,

[1] सूफ़ी संत साहित्य का उद्भव और विकास- प्रो.जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.13 प्र.नवयुग ग्रंथाकर

[2] सूफी मत साधना और साहित्य -रामपूजन,ज्ञानमण्डल लिमिटेट,वाराणसी, पृष्ठ सं.40

उपवास, प्रार्थना एवं खानकाह में रहने की परम्परा पहले से ही तय हो चुकी थी। सूफी अपनी इच्छा से अफगानिस्तान के माध्यम से भारत आए थे। उनके शुद्ध जीवन, भक्ति प्रेम व मानवता के लिए सेवा जैसे विचारों ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया तथा भारतीय समाज में उन्हें आदर सम्मान भी दिलवाया।

हसन यामीनुद्दीन खुसरो, जिन्हें आमतौर परअमीर खुसरोदेहलवी के नाम से भी जाना जाता है। वह भारतीय उपमहाद्वीप के पुरस्कारविजेता कवि थे। वह 13वीं और 14वीं शताब्दी के सबसे विपुल और विविध कवियोंमें से एक होने के लिए प्रसिद्ध हैं। अमीर खुसरो ने हिंदुस्तानी (उर्दू) गीतात्मक कविता और कव्वाली की रचना की, जिससे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में फ़ारसी और अरबी प्रभाव शामिल हुआ। उन्होंने सितार और ख्याल तथा तराना जैसी संगीत शैलियों का आविष्कार किया।

अबुल फजल ने 'आइने-ए-अकबरी' में सूफियों के 14 सिलसिलों का उल्लेख किया है। बहरहाल, यहाँ हम कुछ महत्त्वपूर्ण सिलसिलों का ही उल्लेख करेंगे। ये सिलसिले दो प्रकार के थे बेशरा और बाशरा। बाशरा के अन्तर्गत वे सिलसिले थे जो शरा (इस्लामी कानून) को मानते थे और नमाज, रोजा आदि नियमों का पालन करते थे। इनमें प्रमुख थे चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी व नख्शबंदी सिलसिले। बे-शरा सिलसिलों में शरीयत के नियमों को नहीं मानते थे। कलन्दर, फिरदौसी, सिलसिले इसी समूह से सम्बंधित थे।

यह सिलसिला ख्वाजा चिश्ती (हेरात के निकट) नामक गाँव में स्थापित किया गया था। भारत में चिश्ती सिलसिला ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (जन्म 1142 ई.) द्वारा स्थापित किया गया था, जो 1192 ई. में भारत आए थे। भारत में कई उन्होंने अजमेर को स्थानों का भ्रमण करने के बाद वे अजमेर में स्थायी रूप से बस गए और उन्होंने अजमेर को ही अपनी शिक्षाओं का मुख्य केन्द्र बनाया। उनका मानना था कि "भक्ति का सबसे अच्छा तरीका मनुष्य की सेवा है और इसीलिए उन्होंने दलितों के बीच काम किया।"[3] उनकी मृत्यु 1236 ई. में अजमेर में हुई।

---

[3] सूफी संत मत (दर्शन और विज्ञान)- आर. के गुप्ता, Publisher, पृष्ठ सं.174, B.R. Publishing Corporation.

मुगलकाल के दौरान अजमेर एक प्रमुख तीर्थ केन्द्र बन गया क्योंकि मुगल सम्राट नियमित रूप से शेखों की दरगाहों का दौरा किया करते थे। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी लाखों मुसलमान और हिन्दू अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए दरगाह का दौरा किया करते हैं। नागौर के शेख हमीदुद्दीन उनके चेले थे और कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के अध्यात्मिक उत्तराधिकारी और शिष्य थे, जिन्होंने भारत उपमहाद्वीप में चिश्ती तरीके की नींव रखी थी।

यह सिलसिला शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा स्थापित किया गया था। यह भारत में शेख बहाउद्दीन जकारिया (1182-1262) द्वारा स्थापित किया गया था। उसने मुल्तान में एक अग्रणी खानख्वाह की व्यवस्था की जिसका शासक उच्च सरकारी अधिकारी एवं अमीर व्यापारी दौरा किया करते थे। शेख बहाउद्दीन जकारिया ने खुलकर कबाचा के विरुद्ध इल्तुतमिश का पक्ष लिया एवं उससे शेख-उल-इस्लाम, इस्लाम के नेताद्ध की उपाधि प्राप्त की। ध्यान दें कि चिश्ती संतों के विपरीत, सुहरावर्दियों ने राज्य के साथ निकट संपर्क बनाए रखा। उन्होंने उपहार, जागीरें और यहाँ तक की चर्च सम्बंधित विभाग में भी सरकारी नौकरियाँ स्वीकार कीं। सुहरावर्दी सिलसिला दृढ़ता से पंजाब और सिंध् में स्थापित हो गया था। इन दो सिलसिलों के अतिरिक्त फिरदौसी सिलसिला, शतारी सिलसिला, कादिरी सिलसिला एवं नख्शबंदी सिलसिला भी थे।

सुन्नी संप्रदाय में इस्लामी कानून की चार प्रमुख विचारधराएँ हैं। ये कुरआन और हदीस (हजरत मुहम्मद साहब के कार्य और कथन) पर आधरित हैं। इनमें से आठवीं शताब्दी की इनकी विचारधारा को पूर्वी तुर्कों ने अपनाया और यही तुर्क बाद में भारत में आए। पुरातनवंशी सुन्नी समुदाय को सबसे बड़ी चुनौती मुताजिला अर्थात तुर्कपरधान दर्शन ने दी। जो कठोर एकेश्वरवाद का प्रतिपादक था। इस मत के अनुसार “ईश्वर न्यायकारी है और मनुष्यों के दुष्कर्मों से उसका कोई लेना देना नहीं है। मनुष्यों के पास अपनी स्वतंत्र इच्छा शक्ति है और वे स्वयं अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी हैं।”[4] मुताजिलों का विरोध अशरी विचारधारा ने किया। अबुल हसन अशरी (873&935 ई.पू.) द्वारा स्थापित अशरी विचारधरा ने पुरातन पंथी सिद्धान्त के समर्थन में अपने बुद्धिवादी दर्शन (कलाम) को विकसित किया। इस विचारधारा के अनुसार ईश्वर जानता हैदेखता है और बात भी करता है।

[4] सूफी मत साधना और साहित्य -रामपूजन,ज्ञानमण्डल लिमिटेट,वाराणसी, पृष्ठ सं.434

कुरआन शाश्वत है और स्वयंभू है। इस विचारधारा के सबसे बड़े विचारक थे। अबू हमीद अल गजाली (1058-1111) जिन्होंने रहस्यवाद और इस्लामी परम्परावाद के बीच मेल कराने का प्रयत्न किया। वह एक महान धर्म विज्ञानी थे जिन्होंने 1095 में एक सूफी का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। उन्हें परम्परावादी तत्वों और सूफी मतावलम्बियों दोनों के द्वारा ही बहुत अधिक सम्मानपूर्वक देखा जाता था। अल गजली ने सभी गैरपरम्परावादी सुन्नी विचारधाराओं पर आक्रमण किया। वे कहते थे सकारात्मक ज्ञान तर्क द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता बल्कि आत्मानुभूति द्वारा ही देखा जा सकता है। सूफी भी उलेमाओं की भांति ही कुरआन पर निष्ठा रखते थे।

राज्य द्वारा स्थापित नई शिक्षा प्रणाली के कारण गजाली के विचारों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। इसके अन्तर्गत मदरसों की स्थापना हुई जहाँ विद्वानों को अशरी विचारधारा से परिचित करवाया जाता था। उन्हें यहाँ पुरातनपन्थी सुन्नी विचारों के अनुसार शासन चलाने की शिक्षा दी जाती थी। इन विद्वानों को उलेमा कहते थे। उलेमाओं ने मध्य भारत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

उलेमा के ठीक विपरीत सूफी थे। सूफी रहस्यवादी तथा पवित्र धर्मपरायण पुरुष थे, जो राजनैतिक व धर्मिक जीवन के अध्ःपतन पर दुःखी थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में धर्म के अभद्र प्रदर्शन व धर्म भ्रष्ट शासकों' की उलेमा द्वारा सेवा करने की तत्परता का विरोध् किया। कई लोग एकान्त तपस्वी जीवन व्यतीत करने लगे एवं राज्य से उनका कोई लेना-देना नहीं रहा। सूफी दर्शन भी उलेमा से भिन्न था। सूफियों ने स्वतंत्र विचारों एवं उदार सोच पर बल दिया। वे धर्म में औपचारिक पूजन, कठोरता एवं कटरता के विरुद्ध थे। सूफियों ने धर्मिक संतुष्टि के लिए ध्यान पर जोर दिया।

सूफीवाद की विशेषताओं विचार करें तो मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं-

1. 'सूफ़ीवाद' या 'तसव्वुफ़' इस्लाम का एक रहस्यवादी पंथ है। यद्यपि सूफी संत आंतरिक पवित्रता की बात करते हैं वही रूढ़िवादी मुस्लिम बाहरी आचरण और धार्मिक अनुष्ठानों पर ज़ोर देते हैं।
2. सूफीवाद का मानना है कि- ईश्वर प्रेमी (माशूक) का प्रिय है अर्थात् भक्त अपने प्रिय (ईश्वर) से मिलने के लिए उत्सुक रहता है।

3. सूफीवाद का मानना है कि प्रेम और भक्ति ही केवल ईश्वर तक पहुंचने का साधन है।
4. पैगंबर मुहम्मद के साथ, सूफीवाद ने'मुर्शिद' या 'पीर' को भी बहुत महत्व दिया है।
5. सूफीवाद का मानना है कि उपवास (रोज़ा) या प्रार्थना (नमाज़) की तुलना में भक्ति अधिक महत्वपूर्ण है।
6. सूफीवाद जाति व्यवस्था की भर्त्सना करता है।
7. सूफीवाद को 12 आदेशों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक एक रहस्यवादी सूफी संत के अधीन होता था।

सूफीयों की पूजा पद्धति

सूफीवाद में इस बात पर बल दिया गया है कि ईश्वर और उसके भक्तों के बीच कोई मध्यस्थ नहीं होना चाहिए। इसलिए भक्ति मार्ग ही ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग है।

सूफीवाद अनुसार ईश्वर के साथ मिलन या ईश्वर के दर्शन के मार्ग के रूप को सबसे एहम मानता है। उस दृष्टि से सूफीवाद आध्यात्मिक अभ्यास के आंतरिक औरबाहरी आयामों, गूढ़ और गूढ़ व्यक्ति का विकास केंद्र मानता है। सूफी मजारों में जाने को 'ज़ियारत' कहा जाता है। नृत्य और गायन विशेष रूप से कुव्वली, ऐसी भक्ति का हिस्सा है। सूफी संतों का मानना है कि "गायन में (ज़िक्र और समां) ईश्वर का नाम लेना सम्पूर्ण भक्ति है। चिश्ती समां अमीर खुसरो द्वारा लोकप्रिय किया गया था।"[5]

भारत के सुप्रसिद्ध सूफी संत

1. ख्वाजा अली हुज्जवीरी

[5] सूफी संत साहित्य का उद्भव और विकास- प्रो.जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.212 प्र.नवयुग ग्रंथाकर

जिन्हें दाता गंज बख्श (असीमित शक्ति के वितरक) के नाम से जाना जाता है, 11वीं शताब्दी ई. में रहते थे और उन्हें भारत में अपना घर बनाने वाले सबसे पहले सूफी संत माना जाता है। उनकी मृत्यु लाहौर में हुई और उनकी कब्र एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है।

2. ख्वाजा अली हुज्जवीरी

ख्वाजा अली हुज्जवीरी को सूफीवाद पर एक फारसी ग्रंथ कश्फ-उल-महजूब या कश्फ अल-महजूब के संकलन के लिए जाना जाता है, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद ब्रिटिश ओरिएंटलिस्ट और विद्वान रेनॉल्ड एलीने निकोलसन ने किया था। यह कार्य पैगंबर मुहम्मद के दिनों से लेकर उनके अपने समय तक के सूफियों की जीवनी देता है।

3. शेख बहाउद्दीन ज़कारिया

शेख बहाउद्दीन ज़कारिया कोभारत में सुहरावर्दीया सूफी संप्रदाय की स्थापना का श्रेय दिया जाता है, शेख बहाउद्दीन ज़कारिया ने मुल्तान को अपना आधार बनाया जो संप्रदाय का मुख्यालय भी था। उनका जन्म मुल्तान के पास कोट केहरोर (जिसे अब करोर लाल एसन के नाम से जाना जाता है) में हुआ था।उनका मकबरा मुल्तान में स्थित है।

4. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

भारत में चिश्ती संप्रदाय के संस्थापक, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती को ख्वाजा अजमेरी के नाम से भी जाना जाता था। राजस्थान के अजमेर में मुख्यालय वाला चिश्ती भारत में सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध सूफी संप्रदाय था, जिसने मुसलमानों और हिंदुओं दोनों के भक्तों को आकर्षित किया और ऐसा करना जारी रखा। 1236 में अजमेर में उनकी मृत्यु हो गई।

5. ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

मोइनुद्दीन चिश्ती के सबसे महत्वपूर्ण शिष्य, कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ने दिल्ली में चिश्ती संप्रदाय को लोकप्रिय बनाया। वे 1221 के कुछ समय बाद दिल्ली आए थे। उनकी मृत्यु 1235 में हुई। उनकी कब्र दिल्ली के महरौली में है और कहा जाता है कि कुतुब मीनार का नाम इसी सूफी संत के नाम पर रखा गया है।

6. बाबा फ़रीद-उद-दीन गंज-ए-शकर (1175-1265)

सिख परंपरा में बाबा फ़रीद के नाम से लोकप्रिय, बाबा फ़रीद-उद-दीन गंज-ए-शकर पंजाब के पहले महान सूफ़ी कवि थे। ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के शिष्य, उन्होंने अजोदान (वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में पाकपट्टन) में अपना ख़ानक़ाह (सूफ़ी धर्मशाला) बनवाया। उनके द्वारा लिखे गए 100 से ज़्यादा भजन सिखों की पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किए गए हैं।बेहद गरीबी में जीवन व्यतीत करने वाले बाबा फ़रीद घिसे-पिटे कपड़े पहनते थे। वे फ़ुतूह और नज़ूर (अनचाहे उपहार) पर निर्भर रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि जब उनका बेटा भूख से मर रहा था, तो उन्होंने कुछ भी करने में असमर्थता जताई। उनके बाद उनके सबसे प्रसिद्ध शिष्य हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने पदभार संभाला।

7. हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया

चिश्ती संप्रदाय के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतों में से एक, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया (1236-1325) को बाबा फ़रीदुद्दीन गंज-ए-शकर से आध्यात्मिक विरासत विरासत में मिली थी। उन्हें महबूब-ए-इलाही के नाम से भी जाना जाता था।

8. शेख नसीरुद्दीन मुहम्मद

शेख नसीरुद्दीन मुहम्मद, जिन्हें शेख रौशन चिराग-ए-दिल्ली (दिल्ली का चिराग) के नाम से जाना जाता है, चिश्ती सिलसिले के एक प्रसिद्ध सूफी संत थे, जो सूफियों के संगठित होने वाले सबसे लोकप्रिय संप्रदायों में से एक था। वे उक्त संप्रदाय के सबसे प्रमुख सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य और उत्तराधिकारी थे।

9. गेसुदराज सैयद मुहम्मद हुसैनी

चिराग-ए-दिल्ली के प्रसिद्ध शिष्य गेसुदराज सैयद मुहम्मद हुसैनी थे जिन्हें दक्षिण भारत में चिश्ती संप्रदाय के प्रसार का श्रेय दिया जाता है। बंदनवाज़ (ईश्वर के प्राणियों के हितैषी) के नाम से प्रसिद्ध, उन्होंने कर्नाटक के गुलबर्गा को अपना ठिकाना बनाया।कहा जाता है कि उर्दू में लिखने वाले शुरुआती लेखकों में से एक गेसूदराज ने सूफीवाद पर तीस से अधिक पुस्तकें लिखीं।

10.शेख बदरुद्दीन समरखंडी

वह फिरदौसी संप्रदाय के संस्थापक थे, जिसका प्रभाव बिहार तक ही सीमित था। शेख शर्फुद्दीन याहया मनेरी, जिन्हें बिहार राज्य में नालंदा के जिला मुख्यालय, बिहार शरीफ में दफनाया गया था, फिरदौसी सिलसिले के एक और प्रमुख सूफी संत थे।

11.शाह नयामतुल्ला कादिरी

वे भारत में कादिरिया सिलसिले के संस्थापक थे। शाहजहाँ के सबसे बड़े और सबसे प्रिय पुत्र दारा सिखोह इस सिलसिले के अनुयायी थे। इस सिलसिले ने उत्तर प्रदेश और दक्कन में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। मियाँ मीर कादिरिया सिलसिले के सबसे प्रसिद्ध सूफी संत थे।

12.ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह

इनका जन्म 1563 में काबुल में हुआ था, ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह ने मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल के दौरान नक्शबंदिया सिलसिले की स्थापना की थी। 1603 में 40 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें दिल्ली के सदर बाज़ार क्षेत्र में दफनाया गया। शेख अहमद सरहिंदी नक्शबंदिया संप्रदाय के सबसे प्रमुख संत थे। मुजद्दिद अलिफ़ के नाम से भी जाने जाने वाले शेख अहमद सरहिंदी की मृत्यु 1624 में पंजाब के सरहिंद में हुई थी।

सूफीवाद के दस चरण

सूफीवाद द्वारा ईश्वर को महसूस करने के लिए निर्धारित दस कदम नीचे दिए गए हैं।

1. ज़ुहादका शाब्दिक अर्थ होता है धर्मपरायणता (पवित्रता के आधार पर धार्मिकता)
2. सब्रका शाब्दिक अर्थ होता है धैर्य (देरी या अक्षमता का अच्छा स्वभाव सहिष्णुता)
3. शुक्राका शाब्दिक अर्थ होता है कृतज्ञता (आभार और प्रशंसा की भावना)
4. रिज़ाका शाब्दिक अर्थ होता है प्रस्तुत करना (प्रस्तुत करने का कार्य, आमतौर पर दूसरे के लिए आत्मसमर्पण करना)
5. फ़क़रका शाब्दिक अर्थ होता है गरीबी (बहुत कम या कम पैसा और कुछ या कोई भौतिक संपत्ति होने की स्थिति)

6. ताउवक्कुलका शाब्दिक अर्थ होता है संतोष (जीवन में किसी भी स्थिति में खुश रहना)
7. खौफका शाब्दिक अर्थ होता है भय (कुछ विशिष्ट दर्द या खतरे की प्रत्याशा में अनुभव किया गया भाव)
8. तौबाका शाब्दिक अर्थ होता है पश्चाताप (अपने पिछले आचरण के लिए पछतावा)
9. वाराका शाब्दिक अर्थ होता है संयम (परहेज करने का कार्य या अभ्यास)
10. रज़ाका शाब्दिक अर्थ होता है आशा (आशावादी होना आशा से भरा होना आशाएँ होना)

सूफी संगीत

भारत में दर्शक पहले से ही स्थानीय भाषाओं में भजनों से परिचित थे। इस प्रकार आबादी के बीच सूफी भक्ति गायन तुरंत सफल रहा। संगीत ने सूफी आदर्शों को मूल रूप से प्रसारित किया। "सूफीवाद में संगीत शब्द को "सैमा" या साहित्यिक ऑडिशन कहा जाता है। यह वह जगह है जहाँ कविता को वाद्य संगीत के लिए गाया जाएगा। यह अनुष्ठान अक्सर सूफियों को आध्यात्मिक परमानंद में डाल देता था। सफ़ेद रंग की चूड़ियों में सजे हुएभँवरों का सामान्य चित्रण 'सा' 'मा' के साथ जोड़ा गया है। कई सूफी परंपराओं ने शिक्षा के हिस्से के रूप में कविता और संगीत को प्रोत्साहित किया। सूफिज्म बड़े पैमाने पर जनसांख्यिकी तक पहुंचने वाले लोकप्रिय गीतों मेंपैक किए गए उनके उपदेशों के साथ व्यापक रूप से फैल गया।"[6]

सूफी सभाओं को आज कव्वाली के नाम से जाना जाता है। संगीत सूफी परंपरा के सबसे बड़े योगदान कर्ताओं में से एक अमीर खुसरो (1325) था। निजामुद्दीन चिश्ती के शिष्य के रूप में जाने वालेअमीर को भारत के शुरुआतीमुस्लिम काल में सबसे प्रतिभाशाली संगीत कवि के रूप में जाना जाता था। उन्हें इंडो-मुस्लिम भक्ति संगीत परंपराओं का संस्थापक माना जाता है। उपनाम'भारत का तोता' अमीर खुसरो ने भारत के भीतर इस बढ़ती सूफी पॉप संस्कृति के माध्यम से चिश्ती संबद्धता को आगे बढ़ाया।

[6] रहस्यवाद और सूफी साधना (आधुनिक साहित्य पर आलोचनात्मक निबंध) - प्रो. जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.422 नवयुग ग्रंथगार, लखनऊ

अंत: सूफी अथवा तसव्वुफ़ वर्तमान में एक नए रंग ढंग के साथ युवाओं के आकर्षण का केंद्र बन गया है और इसमें सबसे बड़ा हाथ सूफी संगीत का है। भले ही ज़्यादातर फारसी भाषा में मौजूद सूफियाना कलाम को समझना मुश्किल हो मगर भीड़ फिर भी इसकी तरफ खिंची आ रही है। सूफियाना संगीत का असर केवल कुछ ही हिस्सों तक नहीं बल्कि इसने बॉलीवुड तक को प्रभावित किया है। सूफी संगीत के साथ साथ सूफी डांस भी मक़बूलियत हासिल कर रहा है। दिल्ली की ज़्यादातर दरगाहों के आस पास का इलाका अब बिलकुल बदल गया है। बड़े बड़े मॉल और कम्युनिटी केंद्र खुल गए हैं।

लेकिन दरगाहों के अन्दर की दुनिया जैसे अपनी जगह ठहर गयी हो आज भी वही है जो सदियों पहले था वही लोबान, वही मन्नती धागे और वही मुराद मांगने वालों की भीड़। बहरहाल सारी बहस में इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कुछ सवाल ऐसे ज़ुरूर हैं जिन्हें तसव्वुफ़ के सन्दर्भ में समझना जुरुरी है जैसे कि क्या तसव्वुफ़ उदारवादी इस्लामी सन्देश देता है या फिर ये एक ऐसा बहाना है जो हर मन मर्ज़ी की बात के लिए एक तर्क बन गया है। क्या तसव्वुफ़ का सन्देश ये है कि आदमी समाज से अलग थलग होकर अपने में खो जाये या फिर ऐसा भी कोई मार्ग तसव्वुफ़ सुझाता है। जिसकी सहायता से आदमी समाज का अंग रहते हुए इस दुनिया की बुराइयों से बचा रहे

संदर्भ-ग्रंथ

1. सूफी संत साहित्य का उद्भव और विकास- प्रो.जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.13 प्र.नवयुग ग्रंथाकर।
2. सूफी मत साधना और साहित्य -रामपूजन,ज्ञानमण्डल लिमिटेट,वाराणसी, पृष्ठ सं.40
3. सूफी संत मत (दर्शन और विज्ञान)- आर. के गुप्ता, Publisher, पृष्ठ सं.174, B.R. Publishing Corporation.
4. सूफी मत साधना और साहित्य -रामपूजन,ज्ञानमण्डल लिमिटेट,वाराणसी, पृष्ठ सं.434
5. सूफी संत साहित्य का उद्भव और विकास- प्रो.जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.212 प्र.नवयुग ग्रंथाकर।
6. रहस्यवाद और सूफी साधना (आधुनिक साहित्य पर आलोचनात्मक निबंध) - प्रो. जय बहादुर लाल, पृष्ठ सं.422, नवयुग ग्रंथगार, लखनऊ।

सहायक-ग्रंथ

1) सूफ़ी संत चरित- क्षेमानंद राहत भगवान
2) Religion and Politics - Prof. K.A. Nizami
3) मध्ययुगीन हिंदी सूफी संत, भक्त कवि- बाबा शेख फरीद
4) हिन्दी सन्त काव्य (समाजशास्त्रीय अध्ययन)- डॉ. वासुदेव सिंह
5) The Islamic Path: Sufism, Politics, and Society in India p.15 (2006)
6) सूफी संत रूमी, सूफियाना कलाम-विश्वनाथ

प्रोफ़ेसर गणेश बी. पवार,
हिंदी विभाग, भाषा एवं मानविकी संकाय,
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुरगी
Email: ganeshpawar@cuk.ac.in